दो शब्द

प्रस्तुत शोध-प्रबन्ध "बिलासपुर क्षेत्र के लोकगीतों में लोकजीवन" विषय पर मेरा यह नवीन और मौलिक प्रयास है। यद्यपि बिलासपुर क्षेत्र के लोक-साहित्य के अध्ययन एवं मूल्यांकन की दिशा में शोध कार्य हुआ है। किन्तु लोक-साहित्य की पृथक्-पृथक् विधाओं-लोक-गीत, लोक-कथा, लोक-गाथा, लोक-नाटक तथा लोकोक्तियों को लेकर अभी तक पर्याप्त कार्य एवं शोध की सम्भावना है। अतः इसी कारण मैंने अपने शोध के अध्ययन एवं विवेचन का विषय बिलासपुर क्षेत्र के लोकगीतों को ही चुना है।

प्रस्तावित शोध-प्रबन्ध में बिलासपुर क्षेत्र के लोकगीतों में लोक जीवन के विविध पक्षों को उद्घाटित किया गया है। इस प्रयास में मैं कहाँ तक सफल हुई हूँ यह स्वयं कहना कठिन है। इन मौखिक लोकगीतों को लिपिबद्ध करने में मुझे जिन कठिनाइयों का सामना करना पड़ा है, उनका यहाँ सविस्तार वर्णन न करते हुए केवल इतना ही कहना चाहूँगी कि मुझे इन लोकगीत रूपी अमूल्य मणियों को स्वयं ही एकत्र करना पड़ा है तथा स्वयं ही इनको लोक-जीवन से जोड़ना तथा विश्लेषित करना पड़ा है।

यह सर्वविदित सत्य है कि अद्य युग में लोकगीतों के संकलन का अत्याधिक महत्व है, क्योंकि किसी भी क्षेत्र के लोकगीत उस क्षेत्र-विशेष के लोक-जीवन के सजीव, अनगढ़, अकृत्रिम, स्वच्छन्द, आवरणहीन, प्राचीन एवं स्वाभाविक-चित्र हुआ करते हैं। अपने अध्ययन एवं लेखन के आधार पर मैं भी यह स्पष्टतः कह सकती हूँ कि बिलासपुर क्षेत्र के लोकगीत यहाँ के लोक-जीवन के विशिष्ट एवं महत्वपूर्ण अंग हैं। इन गीतों में जन-जीवन का सच्चा, स्वच्छ एवं प्राकृतिक बिम्ब उजागर हुआ है।

इस कार्य की पृष्ठभूमि में श्रद्धेय डॉ० जगतपाल शर्मा की सतत प्रेरणा एवं सफल निर्देशन सदैव मेरा मार्गप्रशस्त करता रहा है।

हिन्दी विभागाध्यक्षा श्रीमती कृष्णा रैणा तथा श्री राजदेव सिंह, प्रोफैसर हिन्दी विभाग के प्रति हार्दिक धन्यवाद व्यक्त करती हूँ। श्री राम शर्मा की भी मैं आभारी हूँ, जिन्होंने समय-समय पर इस कार्य हेतु अपना सहयोग दिया है। मैं विभाग के अन्य प्राध्यापक-गण का भी धन्यवाद करती हूँ, जिन्होंने सदैव मुझ पर स्नेह बनाए रखा।

हिमाचल प्रदेश विश्वविद्यालय के पुस्तकालयाध्यक्ष एवं कर्मचारी-गण की भी मैं धन्यवादी हूँ, जिन्होंने मुझे पूर्ण सहयोग दिया।

इस शोध-प्रबन्ध के लेखन के लिए मैंने विभिन्न विद्वानों के ग्रंथों का अध्ययन एवं उपयोग किया है, किन्तु सदैव अपनी मौलिक दृष्टि बनाए रखी है। विभिन्न विद्वान-जनों द्वारा किया गया लोक-साहित्य का वैज्ञानिक अध्ययन अभिनन्दनीय है। उन समस्त लेखकों के प्रति कृतज्ञ हूँ, जिनकी कृतियों ने मुझे लाभान्वित किया है, शोध-प्रबन्ध में यथास्थान इसका उल्लेख भी किया गया है।

बिलासपुर क्षेत्र के जनसाधारण की अत्यंत आभारी हूँ, जिन्होंने लोकगीतों की इन अमूल्य मणियों को अद्य तक जीवित रखा है।

लक्ष्मी चौहान जी की भी आभारी हूँ जिन्होंने अपने कुशल टंकन से इस कार्य में सहयोग दिया। भाषा संस्कृति विभाग शिमला॥हि०प्र० का धन्यवाद करना अपना कर्तव्य समझती हूँ।

अंत में मैं उन मित्र-गण तथा स्वजनों का हृदय से आभार प्रकट करती हूँ, जिनके स्नेह, सहयोग प्रेरणा एवं शुभकामनाओं से यह शोधकार्य सम्पन्न हो सका है।

दिनांक: जुलाई, 1990.

॥ शोभा भारद्वाज ॥